P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-II*October-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

इन्दौर भाहर की आंगनवाड़ियों की पाठ्यचर्या का कार्यकर्ताओं की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन

हंसराज पाल
आचार्य(से.नि.),
शिक्षा अध्ययनशाला,
दे.अ.वि.वि.,
इन्दौर।

दुर्गा चौहान
शोध छात्रा,
शिक्षा अध्ययनशाला,
दे.अ.वि.वि.,
इन्दौर।

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य आंगनवाड़ियों की कार्यकर्ताओं की प्रतिक्रियाओं के आधार पर आंगनवाड़ी की पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना था। शोध हेतु शोधकों द्वारा न्यादर्श के रूप में इन्दौर शहर की 50 आंगनवाडियों की 50 कार्यकर्ताओं का चयन किया गया। प्रदत्त संकलन हतु शोधकों द्वारा निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्रदत्त के विश्लेषण हेतु आवृत्ति एवं प्रतिशत का उपयोग किया गया। परिणाम ज्ञात कर निष्कर्ष निकाले गये।

मुख्य शब्द : आंगनवाड़ी, पाठ्यचर्या, मूल्यांकन

प्रस्तावना

आंगनवाड़ी एक ऐसा कार्यक्रम है, जिसके माध्यम से माता एवं शिशुओं को उनके निवास के समीप समेकित सेवाएँ प्रदान की जाती है। इन सेवाओं का क्रियान्वयन भारत सरकार द्वारा महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा किया जाता है, जिनके अंतर्गत समेकित सेवाएँ जैसे जन्म से 6 वर्ष के बालकों व माताओं को पोषण आहार, टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच सेवाएँ, पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा, विद्यालय पूर्व अनौपचारिक शिक्षा आदि प्रदान की जाती है। योजना का संचालन 2.10.1975 से किया जा रहा है। जिसके द्वारा हमारे देश के वातावरण के अनुसार बालकों का सर्वांगीण विकास किया जाने का प्रयास किया जा रहा है। आंगनवाड़ी योजनाओं का क्रियान्वयन निश्चित उद्देश्यों के लिये किया गया। इन उद्देश्यों को प्राप्त किया जा रहा है या नहीं इसे जानने के लिये आंगनवाड़ी की पाठ्यचर्या का मल्यांकन करना आवश्यक हो जाता है। मूल्यांकन के द्वारा ही समेकित सेवाओं की वर्तमान स्थिति का पता लगाया जा सकता है।

औचित्य

आंगनवाड़ी से संबंधित विभिन्न पक्षों पर शोधकार्य किये गये जैसे– लाल (1986) ने विद्यालयों क नामांकनों को बढ़ावा देने के लिये प्रयास का अध्ययन किया, मैंगनी (1989) ने स्वतंत्रता के पश्चात् के काल में हुये गुजरात में पर्व प्राथमिक शिक्षा के विकास पर अध्ययन किया, शर्मा (1990) ने हरियाणा की ग्रामीण योजना भिवानी और आदमपुर में आई.सी.डी.एस. के सामाजिक घटकों की स्थिति पर अध्ययन किया, श्रीवास्तव (1992) ने पूर्व विद्यालयीन बालकों में भाषा विकास की संकल्पना पर विज्ञान उन्मुखी शैक्षणिक खिलौनों के प्रभाव पर एवं दुखाने (1994) ने प्राथमिक शिक्षा में शोध की आवश्यकता का विस्तारिता पर शोधकार्य किया। किन्तु ''इन्दौर शहर की आंगनवाड़ियों की पाठ्यचर्या का कार्यकर्ताओं की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन'' पर कोई शोधकार्य नहीं किया गया। अतः प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का निम्न उद्देश्य था।

आंगनवाड़ियों की कार्यकर्ताओं को प्रतिक्रियाओं के आधार पर आंगनवाड़ी की पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन इन्दौर शहर की 50 आंगनवाड़ियों की 50 महिला कार्यकर्ताओं पर किया गया। अध्ययन हेतु न्यादर्श का चयन दैव न्यादर्श द्वारा किया गया। जिनकी उम्र 21–60 वर्ष के मध्य थीं। वे सामान्य, पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की थीं।

उपकरण

प्रदत्त संकलन हेतु शोधकों द्वारा विकसित प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

प्रदत्त संकलन

प्रदत्त संकलन हेतु शोधकों ने इन्दौर शहर की आंगनवाड़ियों के परियोजना अधिकारी से संपर्क कर अपना परिचय दिया और अपने शोधकार्य का उद्देश्य बताकर उनसे अनुमति लेकर शोधकार्य हेतु प्रदत्त संकलन के लिये आंगनवाड़ी केन्द्रों व कार्यकर्ताओं के पते मय सूची प्राप्त की गयी। तत्पश्चात् शोधकों ने आंगनवाड़िया की कार्यकर्ताओं से तादात्म्य स्थापित कर प्रश्नावलिया भरवायी गयी।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रदत्त विश्लेषण आवृत्ति एवं प्रतिशत द्वारा किया गया।

परिणाम एवं विवेचना

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता की जातिवार संख्या को तालिका 1 में दर्शाया गया है।

तालिका 1 : आंगनवाड़ी कार्यकर्ता को जातिवार संख्या को दर्शाती तालिका

क्रमांक	जति	आवृत्ति	प्रति□ात
1	अनुसूचित जनजाति	07	14
2	अनुसूचित जाति	16	32
3	पिछड़ा वर्ग	22	44
4	सामान्य	50	32

तलिका 1 से यह स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जनजाति की 14 प्रतिशत ,अनुसूचित जाति की 14 प्रतिशत, पिछड़ा वर्ग की 44 प्रतिशत व सामान्य वर्ग की 10 प्रतिशत महिलाएं आंगनवाड़ी में कार्यकर्ता हैं। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि सामान्य वर्ग की महिलाओं की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है, वे उच्च शिक्षा गहण कर उच्च पदों पर कार्य करना पंसद करती है। जबकि अन्य वर्गों की महिलाओ की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण वे आंगनवाड़ी में कार्य करना पसंद करती हैं।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के निवास स्थान से आंगनवाड़ी की दूरी की आवृत्ति एवं प्रतिशत को तालिका 2 में दर्शाया गया हैं।

तालिका 2 : कार्यकर्ताओं के निवास स्थान से आंगनवाड़ो की दूरी को दर्शाती तालिका

क्रमांक	कार्यकर्ताओं के निवास स्थान से आंगनवाड़ी की दूरी	आवृत्ति	प्रतिशत
1	आधा किलोमीटर	11	22
2	एक किलोमीटर	17	34
3	दो किलोमीटर	13	26
4	दो किलोमीटर से अधिक	50	18

तलिका 2 से यह स्पष्ट होता है कि कार्यकर्ताओं के निवास स्थान से आंगनवाड़ी की दूरी आधा किलोमीटर की दूरी 22 प्रतिशत, एक किलोमीटर की दूरी 34 प्रतिशत, दो किलोमीटर की दूरी पर 26 प्रतिशत तथा दो किलोमीटर से अधिक दूरी में रहने वाली का 18 प्रतिशत पायी गयी। इसका संभावित कारण हो सकता है कि आंगनवाड़ी की कार्यकर्ता बनाने के लिये उसी क्षेत्र की स्थानीय महिलाओं का ही चयन प्राथमिकता से किया जाता है, जिससे वे आंगनवाड़ी में नियमित रूप से जा सकें।

आंगनवाड़ी में बच्चों की उपस्थिति की आवृत्ति एवं प्रतिशत को तलिका 3 में दर्शाया गया है।

तलिका 3 : आंगनवाडो में बच्चों की उपस्थिति को दर्शाती तालिका

क्रमांक	उपस्थिति का औसत प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	75 प्रतिशत से अधिक	33	66
2	65 से 74 प्रतिशत तक	09	18
3	41 से 64 प्रतिशत तक	06	12
4	40 प्रतिशत से कम	50	04

उपरोक्त तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि आंगनवाड़ी में 66 प्रतिशत बच्चों की उपस्थिति 75 प्रतिशत से अधिक पायी गयी, 18 प्रतिशत बच्चों की उपस्थिति 65 से 74 प्रतिशत के मध्य पायी गयी, 12 प्रतिशत बच्चों की उपस्थिति 41 से 64 प्रतिशत के मध्य पायी गयी एवं 4 प्रतिशत बच्चों की उपस्थिति 40 प्रतिशत से कम पायी गयी। इसका संभावित कारण यह है कि अधिकतर आंगनवाड़ियों का संचालन निम्न तथा गंदी बस्तियों में किया जाता है। वहाँ के बच्चें आंगनवाड़ी में करायी जानेवाली गतिविधियों से प्रभावित होते है, इसलिये 75 प्रतिशत बच्चों की उपस्थिति आंगनवाड़ियों में पायी गयी। बालकों के स्वास्थ्य से संबंधित सुविधाओं की आवृत्ति एवं प्रतिशत को तालिका 4 में दर्शाया गया है।

तालिका 4: बालकों के स्वास्थ्य से संबंधित सुविधाओं को दर्शाती तालिका

क्रमांक	स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं	आवृत्ति	प्रतिशत
1	टीकाकरण/रोग प्रतिरक्षण	45	90
2	प्राथमिक स्वास्थ्य जाँच	48	96
3	पूरक पोषण आहार	50	100
4	स्वास्थ्य जाँच	50	100
5	अनौपचारिकपूर्ण प्राथमिक शिक्षा	07	14

तलिका 4 से स्पष्ट होता है कि 90 प्रतिशत टीकाकरण/रोग प्रतिरक्षण, 96 प्रतिशत प्राथमिक स्वास्थ्य जाँच, 100 प्रतिशत पूरक पोषण आहार, 100 प्रतिशत स्वास्थ्य जाँच एवं 14 प्रतिशत अनौपचारिक पूर्व प्राथमिक शिक्षा दिया जाना पाया गया। इसका संभावित कारण यह है कि आंगनवाड़ी का संचालन जिन उद्देश्यों के अंतर्गत इस स्वास्थ्य सुविधाओं को प्रदान किया जाता हैं इसमें बालकों के शारीरिक विकास के लिये वृत्ति चार्ट के आधार पर बालकों के स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाता है।

इसलिये उनके अनुसार उनकी सुविधायें प्रदान करती पायी गयी।

आंगनवाड़ी की कार्यकर्ताओं को मिलने वाले मानदेय से संतुष्टि की सीमा की आवृत्ति एवं प्रतिशत को तालिका 5 में दर्शाया गया है।

तालिका 5 : आंगनवाड़ी की कार्यकर्ताओं को मिलने वाले मानदेय से संतुष्टि की सीमा को दर्शाती तालिका

क्रमांक	मिलने वाले मानदेय से संतुष्टि की सीमा	आवृत्ति	प्रतिशत
1	औसत	05	10
2	कुछ सीमा तक	19	38
3	बिल्कुल नहीं	26	52

तलिका 5 से स्पष्ट है कि 10 प्रतिशत कार्यकर्ता मिलने वाले मानदेय से संतुष्टि औसत पायी गयी। 38 प्रतिशत कार्यकर्ता कुछ सीमा संतुष्ट पायी गयी। 52 प्रतिशत कार्यकर्ता बिल्कुल भी संतुष्ट नहीं पायी गयी। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि आंगनवाड़ी का समय सुबह 9 से दोपहर 3 बजे तक का होता है तथा अपनी शैक्षिणक योग्यता 12वीं पास होने के कारण भी वे इस मानदेय से संतुष्ट पायी गयी क्योंकि वे नौकरी के साथ–साथ अपने गृहकार्य को भी आसानी से करती पायी गयी। बिल्कुल भी संतुष्ट नहीं होने का संभावित कारण यह हो सकता है कि लंबे समय से इस योजना से जड़ी है लेकिन उनका ना तो मानदेय बढ़ा है और ना ही कोई उनकी पदोन्नति होती है। इस कारण भी वे बिल्कुल असंतुष्ट पायी गयी।

आंगनवाड़ी में बच्चों को पढ़ाने वाली विधियों की आवृत्ति एवं प्रतिशत को तालिका 6 में दर्शाया गया है।

तलिका 6 : आंगनवाड़ी में बच्चों को पढ़ाने वाली विधियों को दर्शाती तालिका

क्रमांक	बच्चों को पढ़ाने वाली विधियाँ	आवृत्ति	प्रतिशत
1	खेल विधि	22	44
2	वर्णमाला विधि	21	42
3	प्रदर्शन विधि	26	52
4	व्याख्यान विधि	17	34

तलिका 6 से स्पष्ट है कि 44 प्रतिशत खेल विधि से पढ़ाने वाली पायी गयी, 42 प्रतिशत वर्णमाला विधि पढ़ाने वाली पायी गयी, 52 प्रतिशत प्रदर्षन विधि के द्वारा पढ़ाती पायी गयी एवं 34 प्रतिशत व्याख्यान विधि के द्वारा पढ़ाती पायी गयी। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि आंगनवाड़ी में बच्चें खेल–खेल में सीखना पसंद करते है। इसलिये खेल विधि से पढ़ाती पायी गयी। वर्णमाला विधि को चार्ट के माध्यम से सिखाया जाता है जिसमें बच्चें अक्षरों को चित्र देखकर पढ़ते है, आंगनवाड़ी में बच्चों को शारीरिक गतिविधियों का प्रदर्शन करके सिखाया जाता है। अतः इस विधि में कहना, सुनना आदि विधियों के द्वारा अध्ययन करवाया जाता है। इसलिये इन विधियों द्वारा आंगनवाड़ी के अन्तर्गत बालकों को अध्ययन करवाया जाता है।

आंगनवाड़ी में आनेवाली समस्याओं को तालिका 7 में दर्शाया गया है।

तालिका 7 : आंगनवाड़ी में आनेवाली समस्याओं को दर्शाती तालिका

क्रमांक	आंगनवाड़ी में आनेवाली समस्याओं	आवृत्ति	प्रतिशत
1	बैठक व्यवस्था	19	38
2	अल्प मानदेय	26	52
3	बच्चों की अरुचि	05	10
4	पालकों की अज्ञानता	29	58
5	समुदाय के लोगों का असहयोग	89	20

तलिका 7 से स्पष्ट है कि 38 प्रतिशत बैठक व्यवस्था की समस्या, 52 प्रतिशत अल्प मानदेय की समस्या, 10 प्रतिशत बच्चों की अरुचि की समस्या, 58 प्रतिशत पालकों की अज्ञानता की समस्या एवं 20 प्रतिशत समुदाय के लोगों का असहयोग की समस्याएं पायी गयी। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि आगंनवाड़ियाँ किराये के कमरों में चलाते है उसी कमरे में उन्हें पोषण आहार रखना, व प्रदान करना होता है, साथ ही शाला पूर्व शिक्षा देना तथा आंगनवाड़ी की अन्य गतिविधियां भी उसी कमरे में करवायी जाती है।

अतः बैठक व्यवस्था की समस्या का होना पाया गया। वर्तमान समय में जो मानदेय कार्यकर्ताओं को दिया जा रहा है, इसी में उन्हें अपना गुजारा करना होता हे। मंहगाई के अनुसार यह बहुत कम है, अल्प मानदेय की समस्याएँ पायी गयीं। बालकों के कुपोशित होने की समस्या पालकों की अज्ञानतावश पायी गयी। समुदाय के लोगों का असहयोग के समस्या इसलिये पायी गयी क्योंकि आंगनवाड़ी से संबंधित अभिलेखों में सही जानकारी नहीं देते।

संदर्भ

1. दवे जी. (1996). बालवाड़ी. वाराणसी : सर्व सेवा संघ प्रकाशन
2. शैरी, जी. पी. (1972). मातृकला एवं शिशु कल्याण. आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर
3. तलसेरा, एच. (1997). आंगनवाड़ी शिक्षक संदर्शिका. नई दिल्ली : हिमांशु पब्लिकेशन्स
4. Buch M. B. (Ed.). (1974). A Survey of Research in Education. Baroda: Centre of Advanced Study in Education.
5. Buch, M. B. (Ed.). (1979). Second Survey of Research in Education (1972-1978). Baroda: Society for Educational Research and Development.
6. Buch, M. B. (Ed.). (1986). Third Survey of Research in Education (1978-1983). New Delhi: NCERT.
7. Buch, M. B. (Ed.). (1991). Forth Survey of Research in Education (1983-1988) Vol I & II. New Delhi: NCERT.

8. NCERT. (1997). Fifth Survey of Research in Education-Vol I (1988-1992). New Delhi: Author.
9. NCERT. (2000). Fifth Survey of Research in Education-Vol II (1988-1992). New Delhi: Author.
10. NCERT. (2006). Sixth Survey of Research in Education-Vol I (1993-2000). New Delhi: Author.
11. NCERT. (2007). Sixth Survey of Research in Education-Vol II (1993-2000). New Delhi: Author.

Simple Guidelines to Review a Research Paper

Please, carefully read the information below, it may help you to review a research paper:-

1. Carefully review the paper

- Your review should not be about what should have been done; rather it should be a critique of **what the author actually did**.
- If you think paper is poorly written or the contribution is poorly described, **state that, instead of rejecting the paper on this basis, give your comments/suggestions for modification.**
- Don't review a research paper under the **time pressure**. Spare a little of your **valuable time to review** a paper properly.

2. Review to accept papers

- When you read a paper, try to **find reasons to accept the paper**, you should spot what is good about the paper and highlight that in your review.
- If you don't like the approaches, fine, but try to decide what about the author's paper makes it acceptable for publication, No doubt, all the papers are not worth publishing, but **almost all papers have an idea** THAT the author is promoting and **you should review to accept that idea**.
- Sometimes, the idea is bad/wrong/ already been done and so paper can't be accepted. But read the paper looking for **a reason to accept** it.
- When you write your review, write with the mind set **"how to improve this paper"**.

3. Write a Review

- Review form have option "Yes or No". You should write comments after "yes or no" mark that help the authors to improve his paper. Following should all be covered somewhere in your review:
- Objective of the papers
- Highlight the contribution of the paper as well as how significant it is.
- State your recommendation and why
- State ways to improve the paper
- You should note the small things , but ideally place them at the end of your review in a separate section as "Details to improvement/ General Comments"

4. Things to avoid

- Do not say "The author should add additional references or write on such pattern**" without actually write examples for desired pattern**.